c. आ *in dial. Vêd.* dare, impertiri (*zuwenden*). Rigv. 33. 1.: केतम् परम् आवर्तते नः «notitiam praeclaram impertitur nobis».

2. वृज् 10. *P. interdum A.* 1) relinquere. वर्जित relictus, destitutus, privatus. In. 2. 5.: वेदश्रुतिवर्जितैः; 5. 50.: मानवर्जितः; N. 13. 53.: भूषणैर् अपि वर्जितम्. 2) excipere, exceptare. R. Schl. I. 14. 40.: प्रददौ … अभयं सर्वभूतेभ्यो वर्जयित्वा तु मानुषान्. 3) vitare, fugere. Hit. 22. 13.: वर्जयेत् तादृशम् मित्रं विषकुम्भम् पयोमुखम्; Mah. 3. 13882. Se abstinere. Man. 2. 177.: वर्जयेन् मधु मांसञ्च; 9. 246.: यत्र वर्जयते (schol. न गृह्णाति) राजा पापकृतो धनागमम्; Mah. 1. 3959. Renuntiare *alicui rei.* Mah. 3. 10583.: येने ’मम् (पक्षिणम्) वर्जयेथाः.

c. अप solvere *promissum.* R. Schl. I. 44. 49.: प्रतिज्ञाम् अपवर्जय; 51.: प्रतिज्ञा ना ’पवर्जिता.

c. आ 1) flectere, inclinare. H. 1. 11.: आवर्जितलतावृक्षम् मार्गम् चक्रे; Ragh. 16. 19.: आवर्ज्य शाखाः (schol. आनय्य); 13. 24. 2) vertere, invertere. Sak. 12. 13.: कलसम् आवर्जयति. 3) invergere, infundere, libare. Ragh. 1. 62.: हविर् … आवर्जितम् … अग्निषु; 1. 67.: आवर्जितम् मया पयः. 4) offerre, dare (v. 1. वृज् praef. आ). Ragh. 8. 26.: तनयावर्जितपिण्ड (schol. आवर्जितं दत्तम्).

c. परि relinquere, vitare, fugere. Hit. 26. 18.: यस्मिन् देशे न सन्मानम् … तन् देशम् परिवर्जयेत्; Man. 2. 57.: तस्मात् तत् (अतिभोजनम्) परिवर्जयेत्; 3. 6. 4. 73. — परिवर्जित relictus, destitutus, privatus. Man. 5. 154.: गुणैः परिवर्जितः.

c. वि 1) *id.* Man. 4. 42. N. 14. 9. Bh. 7. 11. Su. 2. 23. 2) dimittere. In. 5. 30.: तव पित्रा विवर्जिताः.

3. वृज् 7. *P.* वृणज्मि relinquere. Intens. *in dialecto Vêd.* dare. Rigv. 63. 7.: वरिवः «dedisti» (= अवरिवर्) secundum euphon. legem pro अवरिवर्ज् + स्, v. gr. 320. 562.).

c. नि *in dial. Vêd.* 1) immergere. Rigv. V. 18. 12.: तम् अप्सु निवृणग् वज्रबाहुः (v. Westerg.). 2) refugare, propulsare. Rigv. 53.: त्वम् एतान् जनराज्ञः … निवृणक् «tu illos pagorum reges … propulsasti»; 101. 2.: य. शुष्णम् अशुषन् न्यावृणक् «qui Sushnam madidum exstirpavit». 3) cohibere. Rigv. 54. 5.: नि यद् वृणक्षि … वना «siquidem aquas cohibes».

4. वृज् 2. *A.* purificare. Man. 9. 20.: यन् मे माता प्रलुलुभे … तन् मे रेतः पिता वृङ्क्ताम् (schol. शोधयतु); Rigv. 3. 3. 83. 6.

वृजिन *n.* (r. वृज् s. इन) peccatum. Am.

वृञ्ज् 2. *A.* (scribitur वृज्) relinquere. (*Vid.* वृज्.)

c. प्र purificare. Rigv. 116. 1.: नासत्याभ्याम् बर्हिर् इव प्रवृञ्जे. *Vid.* 4. वृज्.

वृण् 8. *P.* (भक्षे *v.*) edere. *Cf.* व्रण्.

1. वृत् 1. *A.* 1) ire. *Haec primitiva significatio fere solum in compositis invenitur. Cum sequente* पुनर् redire. Bh. 8. 26.: वर्तते पुनः. 2) *saepissime* versari, esse, existere, morari, locum habere. In. 1. 27. शिशुर् यथा पितुर् अङ्के सुसुखं वर्तते; 5. 23.: वर्तमाने मनोरमे … परमोत्सवे; Su. 1. 4.: निरन्तरम् अवर्तेतां समसुखदुःखाव् उभौ; N. 4. 6.: मनस् ते तेषु वर्तताम्; 9. 3.: दमयन्त्याः पणः … वर्तताम्; Bh. 3. 22.: वर्ते कर्मणि; Br. 1. 15.: जीविते वर्तमानस्य; Sa. 4. 2.: तद् वाक्यन् नारदेनो ’क्तं वर्तते हृदि नित्यशः. *Etiam par.* A. 9. 10.: स देशो यत्र वर्तामः. — वृत्त quod fuit, praeteriit, evenit, accidit. Su. 2. 1.: उत्सवे वृत्तमात्रे; In. 5. 53.: सर्वं यथावृत्तम् … न्यवेदयत्. *Subst. n.* eventus, eventum, res quae accidit. In. 5. 52.: रजनीवृत्तम्; 61.: वृत्तम् पाण्डुसुतस्य; Sa. 6. 8.: बाल्यवृत्तानि पुत्रस्य. 3) vivere, subsistere. Man. 3. 77.: यथा वायुं समाश्रित्य वर्तन्ते सर्वजन्तवः (schol. जीवन्ति). — वृत्त qui vixit, vitam finivit, *inde* mortuus. R. Schl. 73. 1.: श्रुत्वाच पितरं वृत्तम्. 4) se gerere *adversus alqm, c. loc.* R. Schl. II. 52. 33.: यथा राजनि वर्तसे तथा मातृषु वर्तेथाः सर्वासु; 73. 9.: त्वयि … भगिन्याम् इव वर्तते. — वृत्त qui se gessit. N. 8. 13. 5) uti, adhibere. R. Schl. II. 82. 18.: सर्वोपायश्च वर्तिष्ये विनिवर्तयितुं